स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्र्वविद्यालय, नांदेड

के मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत पीएच. डी. हिंदी उपाधि
हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध का प्रारूप

"डॉ. रुपनारायण सोनकर के साहित्य का अनुशिलन"

:शोधकर्ता:

संगिता प्रभाकरराव गवळे
एम. ए., एम. एड., एम. फिल. (हिंदी)
पीपल्स कॉलेज, नांदेड.

:शोध निर्देशक:

प्रा. डॉ. सुभाष क्षीरसागर
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय, वसमत, जि. हिंगोली

मार्च - २०२२

"डॉ. रुपनारायण सोनकर के साहित्य का अनुशिलन"

प्रस्तावना:

डॉ. रूपनारायण सोनकर हिंदी दलित साहित्य के बहुचर्चित रचनाकार है। वे नाटक, उपन्यास, कहानी, आत्मकथा इन विभिन्न विधाओंमें लेखन कर हिंदी दलित साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बनाने के लिए प्रयासरत है। तथा अभिनेता के रुप में भी प्रतिष्ठित है। सोनकरजी मुलत: बेहद संवेदनशील, सरल, सहज, परिश्रमी एवं प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व के धनी है। उनकी बहुमुखी प्रतिभा को ध्यान में रखकर उन्हें डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय साहित्य सम्मान, साहित्य महोपाध्याय (डी. लिट.) नाट्यरत्न एवं हिंदू मुस्लिम एकता जैसे विभिन्न पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त है। सोनकरजी ने जिस सभ्यता, संस्कृति और समाजव्यवस्था का वर्णन सटीक अंदाज में किया है। वह मात्र कल्पना नही बल्की भोगा हुआ यथार्थ है। जनता के जीवन में हर दिन हर पल घटनेवाला यथार्थ ही सोनकरजी के साहित्य का यथार्थ है।

डॉ. रुपनारायण सोनकर दलित साहित्य के एक गौरवमयी व्यक्तित्व है। पीछले कुछ वर्षोंसे दलित साहित्य अपनी एक अलग पहचान बना चुका है। यह साहित्य दलितों के उत्थान के लिए किए जा रहे प्रयासों का एक हिस्सा है। इस साहित्य का प्रधान उद्देश दलित जीवन के अस्तित्व को झकझोरना, उनकी सोयी हुई, दबी हुई चेतना को जागृत करना है। डॉ. रुपनारायण सोनकर का साहित्य भी दलित, पीडित, शोषित समुदाय को उनके जीवन मूल्यों की पहचान कराते हुए उनमें आत्मसम्मान को जागृत करने के लिए लिखा गया है। डॉ. नामवर सिंह ने सोनकर के संदर्भ में उनके कहानी संग्रह के प्रकाशन समारोह में कहा है "सोनकर सब से बडे दलित लेखकों में से एक है। इनके साथ " घर का जोगी-जोगडा आन गाँव का सिद्ध" वाली कहावत चरित्रार्थ न करें। आपके बीच में सोनकर जैसा बडा लेखक

मौजुद है। फिर भी आप लोग बाहर तलाश कर रहे है।" अत: सोनकरजी हिंदी दलित साहित्य के एक सचेत एवं परिवर्तनशील मुल्यों का आधार लेकर लिखनेवाले रचनाकार है।

अनुसंधान की भुमिका:

वर्तमान समय में दलित साहित्य हिंदी साहित्य से अलग अपनी स्वतंत्र पहचान बना चुका है। इतना ही नही उसने हिंदी के परंपरागत सौंदर्यशास्त्र को नकारते हुए अपना पृथक, सौंदर्यशास्त्र भी निर्मित किया है। दलित साहित्य का अपना चिंतन-दर्शन और विचारधारा है। उसकी अपनी प्रतिबद्धता है जो निश्चित ही कई अर्थों में हिंदी साहित्य से भिन्न है। दलित साहित्य को विगत दो-ढाई दशकों मे मिली लोकप्रियता ज्ञान के क्षेत्र में दलित विमर्श लग-भग अनिवार्य-सा हो गया है। साहित्य के क्षेत्र के अंतर्गत एक और साहित्य अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष कर रहा है। यह साहित्य समाज के ऐसे वर्ग का साहित्य है जिस में उसके जीवन की वास्तविकता का चित्रण हुआ है। यह साहित्य दलित साहित्य के नाम से साहित्य में अपनी पहचान रखता है।

डॉ. रुपनारायण सोनकर ने अपने साहित्य के माध्यम से अपने जीवन के यथार्थ को पटलपर रखा है। समाज द्वारा दी गई वेदना, पीडा, उपेक्षा आदि विभिन्न समस्याओं को अपने साहित्य में अभिव्यक्ति दी है। सोनकर का साहित्य उस वर्ग का साहित्य है जो आज के आधुनिक समय में परंपरा और धर्म के आधारपर बनाई गई दीवार को ढहाने में पुर्ण सक्षम है। इनके साहित्य के अंतर्गत जातिभेद, वर्णद्वेश, छुआ-छुत, उपेक्षा की भावना का पुर्ण प्रतिकार किया गया है। साथ ही समाज में समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे की भावना का चित्रण है। यह साहित्य समानता का साहित्य है, स्वतंत्रता का साहित्य है। बराबरी का साहित्य है और साथ ही अपने अस्मिता, अस्तित्व एवं अस्मिता की लडाई की प्रेरणा देनेवाला यह साहित्य है। लेखक का साहित्य दलित चेतना से ओतप्रोत है। मराठी दलित साहित्य की प्रेरणा लेकर तथा

हिंदी प्रदेश की राजनिती में हुए परिवर्तन फलस्वरुप हिंदी क्षेत्र में दलित साहित्य के स्वरुप का सिलसिला शुरु हुआ।

डॉ. रुपनारायण सोनकरजी ने विविध विधाओं मे दलित समाज के वास्तव रुप को प्रस्तुत करते हुए स्तरीय साहित्य सृजनकर साहित्य आंदोलन खडा किया है। उनकी रचना के मुल में आंबेडकरवादी विचारधारा प्रमुख है और आंबेडकरवादी नई समाज रचना का निर्माण करना इनका प्रमुख लक्ष है।

अनुसंधान की पद्धतियाँ:

ज्ञान का क्षेत्र विस्तृत और व्यापक होने के कारण अध्ययन के लिए विभिन्न शोध पद्धतियों की आवश्यकता होती है। इसलिए प्रस्तुत शोधकार्य 'रुपनारायण सोनकर के साहित्य का अनुशिलन' की व्यापकता को पुरा करने के लिए आलोचनात्मक, वर्णनात्मक, समीक्षात्मक, विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक पद्धतियों का सहारा लिया जाएगा। इस अनुसंधान कार्य में प्रसंगाअनुरुप अन्य पद्धतियों को भी अपनाया जाएगा।

अनुसंधान का उद्देश या आवश्यकता:

वर्तमान समय के दलित साहित्यकारों के साहित्य में सुक्ष्म अंतरदृष्टी, संयमित कला, अनुशासन और आत्मियता का चित्रण सक्षमता से किया गया। उनके साहित्य को शोध के द्वारा विश्लेषित करना एवं उनपर विचार करना शोधकार्य की सार्थकता को सिद्ध करता है। दलित लेखक ऐसे साहित्यकार ही है, जो दलित साहित्य के लेखन में सादगी और जीवन के कटु-सत्य को उजागर करने का प्रयास किया गया है। जिस में दलित लेखक रुपनारायण सोनकर के साहित्य, उपन्यास, कहानी, आत्मकथा, काव्य, नाटक आदि विधाओं का विश्लेषण करना शोध की आवश्यकता है। इनके साहित्य के अंतर्गत प्रतिरोधी चेतना में छूपी भावनाओं को उनके पिछे छुपे मर्म को पुर्ण गहराई के रुप में चित्रण किया गया है। इस तथ्य को दृष्टि में

रखते हुए रुपरेखा अनुसार हर विधा में निहित समस्याओं, प्रतिरोधी मुलचेतना, को विश्लेषित किया जाएगा। लेखक की भाषा भावनाओं के विभिन्न स्तर आदि का सुक्ष्मातिसुक्ष्म विश्लेषण करते हुए राजनितिक, धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितिओं का चित्रण किया जाएगा। साथ ही भाषा की सशक्तता एवं संप्रेषनियता पर पुर्ण विचार करना। ज्योतिबा फुले, डॉ. आंबेडकर जैसे सुधारकों ने सामाजिक अव्यवस्थापर किया गया व्यंग्य सैद्धांतिक पृष्ठभुमी के विविध आयाम, दलितों की स्वानुभुति व सहनुभुति, दलित अस्मिताओं के प्रश्न व शिल्पगत विधान को प्रस्तुत करने का उद्देश रहेगा।

अध्ययन और अध्यापन करते समय विशेष कर के मेरी रुचि दलित साहित्य से रही है। मैने एम. फील. का लघुशोध प्रबंध डॉ. सुशीला टाकभौरे के नाटक का अनुशिलन (विशेष संदर्भ: रंग और व्यंग्य) विषयपर लिखा था। अत: मेरी दलित साहित्य के प्रति विशेष रुचि विद्यार्थी जीवन से ही रही है। मैने हिंदी दलित कथा साहित्य के अनेक रचनाकारों का अध्ययन किया। इन दलित कथा साहित्यकारों में एक रुपनारायण सोनकर का नाम बडे अदब से लिया जा सकता है। मैने पीएच. डी. नामांकन के पश्चात अपने मार्गदर्शक गुरु आदरणीय प्रा. डॉ. सुभाष क्षीरसागर सरजी के सामने रुपनारायण सोनकर के साहित्यपर शोधकार्य करने का प्रस्ताव रखा। प्रस्तुत विषयपर सरजी से चर्चा की तब उन्होंने कुछ सुझाव देकर इस विषयपर कार्य करने की अनुमति प्रदान की। तथा 'रुपनारायण सोनकर के साहित्य का अनुशिलन' यह विषय निश्चित हुआ।

अनुसंधान का लक्ष्य:

एक अनुसंधानकर्ता का मुख्य लक्ष यह होता है कि, वह अपने विषय से संबंधित सभी पहलुओं का अध्ययन कर उनका विश्लेषन करे। दलित समाज की वास्तविक चेतना अपने समाज को पराधिनता की उन परंपराओं से मुक्ति दिलाने की है, जिन्होंने उन्हे सदियों से भारतीय समाज की मुख्य धारा से अस्पृश्य और कमजोर बनाए रखा।

हिंदी में लिखित साहित्य ऐसी अस्पृश्यता के खिलाफ संघर्ष की आवाज उठाता है तथा भारतीय समाज के जीवन की मुख्य धारा में दलित समाज को एक निश्चित अर्थ प्रदान करते हुए उनके द्वारा ज्ञान, पानी और जमिन जैसी सार्वजनिक वस्तुओं के लिए किए जा रहे संघर्ष को समाज के सामने लाने का प्रयास किया जाएगा।

डॉ. रूपनारायण सोनकर के साहित्य में अभिव्यक्त हुए सवाल और उस से उपजे संघर्ष का अध्ययन किया जाएगा। उनके साहित्य में उभरा यह संघर्ष एक सामाजिक जीवन मूल्योंपर केंद्रित सामाजिक व्यवस्था की मांग करता है। आज-कल सोनकर के साहित्य की चारो ओर चर्चा हो रही है। अब आवश्यकता इस बात की है कि उनके साहित्य का संदेश आम जनतक पहुँचे क्योंकि भारतीय समाज का एक वर्ग ऐसा भी है जिसको सदियों से उत्पिडित, अपमानित किया गया जिनके साथ पशुओं से बत्तर व्यवहार किया गया और दुसरों की सेवा करना ही इनका परम कर्तव्य समझाया गया। इन में चेतना विकसित न हो इसलिए इन्हें शिक्षा से दुर रखा गया। इन्हें मुलभुत अधिकारों से दुर रखा गया। इस बहिस्कृत समाज को अपने हक्क एवं अधिंकरों के प्रति जागृत करने के लिए डॉ. रुपनारायण सोनकर का साहित्य कैसा सक्षम है इसकी प्रचिती कराई जाएगी।

आज दलित वर्ग अपनी अस्मिता, सत्ता-संघर्ष के साथ-साथ साहित्य और सांस्कृतिक संघर्ष के संकट से गुजर रहा है। इसी संघर्ष की अभिव्यक्ती इस शोधप्रबंध में हो रही है। दलित समाज में संघर्ष और चेतना का स्वर फुंकने में दलित साहित्य निरंतर क्रियाशील रहा है। सामाजिक, राजनितिक पटलपर हुए अनेक आंदोलनों में भी इसकी धार को तेज किया है। आज संपुर्ण भारत में चलाए जा रहें दलित आंदोलन का उद्देश वर्णव्यवस्था का अंत कर उसकी जगह एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना है जिस में व्यक्ती की सामाजिक, धार्मिक , आर्थिक व राजनितिक मुक्ति की बात हो। जिस में समाज की कसोटीपर कसा जा सके।

दलित साहित्य को आंबेडकरवादी जीवन प्रेरणाओं का साहित्य कहा जाता है, क्योंकि आंबेडकर दर्शन दलित साहित्य का प्रेरणास्त्रोत है। इन्होंने दलित साहित्य का मार्ग प्रशस्त किया है। जिसके कारण समकालिन दलित साहित्य फल-फुल रहा है। तथा जिसके अनेक विधाओं जैसे आत्मकथा, कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक आदि विधाओंद्वारा अभिव्यक्ति हो रही है।

मैने अपने शोध शिर्षक 'डॉ. रुपनारायण सोनकर के साहित्य का अनुशिलन' शोधप्रबंध के रुप में चुना है। जिसके द्वारा सोनकरजी के साहित्य को अनेक विधाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाएगा। अत: इस शोध कार्य को करने का मेरा मुल उद्देश यह रहेगा की भारतीय वर्ण व्यवस्था की पक्षपात पुर्ण और दमनकारी नितियों के खिलाफ दलित समाज की एक रचनात्मक अभिव्यक्ति को उजागर कराना है। शोधनिर्देशक की अनुमती के पश्चात प्राप्त विषय डॉ. रुपनाराण सोनकर के साहित्य का अनुशिलन इनके साहित्य का सुक्ष्मता से अध्ययन हो इसलिए सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत शोध विषय का विभाजन निम्नलिखित अध्यायों में पुरा किया जाएगा।

अनुसंधान की रुपरेखा:

प्रथम अध्याय: डॉ. रुपनारायण सोनकर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

रुपनारायण सोनकर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अंतर्गत जीवनवृत्त, दलित जीवन का भोगा हुआ यथार्थ व्यक्तित्व और कृतित्व का सामान्य परिचय दिया जाएगा।

द्वितीय अध्याय: रूपनारायण सोनकर का उपन्यास साहित्य

इस अध्याय के अंतर्गत रुपनारायण सोनकर के उपन्यास डंक, सूअरदान की कथावस्तु की समिक्षा की जाएगी। उपन्यासों के चरित्र-चित्रण को प्रस्तुत करते हुए उपन्यासों में चित्रित

समस्याओंपर चर्चा की जाएगी। उपन्यास की कथा, चरित्र की प्रासंगिकता का विश्लेषण किया जाएगा।

तृतीय अध्याय: रूपनारायण सोनकर का कहानी साहित्य

इसके अंतर्गत कहानी की रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डाला जाएगा। 'जहरिली जडे' कहानी संग्रह की कथावस्तु की समिक्षा करते हुए चरित्र सृष्टि का निरुपण किया जाएगा। कहानी में व्यक्त विविध समस्याओं को विवेचित करने का प्रयास किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय: रुपनारायण सोनकर का नाट्यसाहित्य

इस अध्याय में नाट्यसाहित्य की विवेचना की जाएगी। इस अध्याय के अंतर्गत नाटक शब्द का अर्थ, उद्‌भव एवं विकासपर संक्षिप्त चर्चा की जाएगी। नाटककार सोनकरजी के नाटक विषधर, रहस्य, एक दलित डिप्टी कलेक्टर, छायावती, महानायक आदि नाटकों की कथावस्तु, पात्रयोजना और रंगमंचीयतापर समिक्षात्मक पद्धतिद्वारा विवेचन किया जाएगा।

पंचम अध्याय: रुपनारायण की आत्मकथा एवं अन्य साहित्य

इस अध्याय में सोनकरजी की आत्मकथा और अन्य साहित्य का अध्ययन किया जाएगा जिसके अंतर्गत मैने नागफणी आत्मकथा में वर्णित दलित संघर्ष और समस्याओं को चित्रित करना है। काव्य संकलन के अंतर्गत काव्य में निरुपित हास्य व्यंग्य को उभारने का प्रयास किया जाएगा।

षष्ठम् अध्याय: भाषा शैली:

इस अध्याय में डॉ. रुपनारायण सोनकर के साहित्य की भाषा शैली का विश्लेषन किया जाएगा। जिसमें जनभाषा शैल्पिक विशेषताएँ, विभिन्न कथाशैलियों का विवेचन किया जाएगा।

सप्तम अध्याय: उपसंहार:

अंत में उपसंहार और संदर्भग्रंथ सूचि को प्रस्तुत किया जाएगा।

यह प्रस्तावित अनुसंधान का प्रारुप है, इस में यथासंभव आवश्यकता अनुरुप शोध मार्गदर्शक के अनुमति से परिवर्तन एवं परिवर्धन भी हो सकता है।

शोधकर्ता

संगिता प्रभाकरराव गवळे

शोध निर्देशक

प्रा. डॉ. सुभाष एन. क्षीरसागर
बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय,
वसमतनगर

Prof.Dr.Subhash N.Kshirsagar
Research Guide & Head,Dept. of Hindi
B.S.College,Basmathnagar